सत्य मार्ग की खोज, सीरीज़-21

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) एक परिचय

जमाअत इस्लामी हिन्द

दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, नई दिल्ली-110025

9650022638

www.islamsabkeliye.com

facebook.com/islamsabkeliyeofficial

'अल्लाह कृपाशील, दयावान के नाम से'

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)* एक परिचय

''न किसी काले को किसी गोरे पर, न किसी गोरे को किसी काले पर कोई बढ़ोत्तरी हासिल है। सब आदम की सन्तान हैं और इन्सान होने की हैसियत से सब बराबर हैं।''

मानव-समानता के यह महान विचार समस्त मानवजाति के लिए ईश्वर के अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के हैं, जिनका जन्म 571 ई॰ में अरब के प्रसिद्ध शहर मक्का में हुआ था और 40 वर्ष की आयु में अल्लाह ने जिनको अपना नबी बनाया और अपनी पवित्र वाणी क़ुरआन वह्य (प्रकाशना) के माध्यम से आप पर अवतरित की। अल्लाह की आज्ञानुसार 23 वर्ष तक आपने लोगों को सत्य धर्म की ओर बुलाया और अल्लाह का संदेश सुनाया और सन् 632 ई॰ में अपने मिशन के पूर्ण होने के पश्चात वापस ईश्वर से जा मिले। वर्तमान विश्व की 25 प्रतिशत जनसंख्या आपको अपना आदर्श और मार्गदर्शक स्वीकार करके आपका अनुसरण करने का प्रयत्न कर रही है और आपके अनुयायियों की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है।

अवतरण का उद्देश्य

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के अवतरण का उद्देश्य था ''समाज-सुधार''। पर यह 'समाज-सुधार' उससे भिन्न था, जिसका प्रयत्न समय-समय पर उठने वाले अन्य समाज सुधारकों ने किया है। इस ''समाज-सुधार'' की रूपरेखा स्वयं ईश्वर द्वारा प्रदान की गई थी और इसमें मनुष्य की आस्था और विचारधारा से लेकर उनके सम्पूर्ण जीवन को पूर्णरूप से बदल देने के अत्यन्त कठिन कार्य पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को नियुक्त किया गया था।

''निश्चय ही हमने अपने रसूलों को साफ़-साफ़ निशानियों और मार्गदर्शनों के साथ भेजा, और उनके लिए किताब और तुला उतारी, ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम हों।''

(क़ुरआन 57:25)

अर्थात् मानव-जीवन के हर क्षेत्र में आए बिगाड़ को पूरी तरह समाप्त कर देना और हर क्षेत्र में उसे न्याय व इन्साफ़ के मार्ग पर चलाने का प्रयत्न करना ही हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के जीवन का मुख्य उद्देश्य था।

***(सल्ल॰) : सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अर्थात् उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो।**

समाज की दयनीय स्थिति

आप (सल्ल.) पर डाली गई ज़िम्मेदारियों के महत्व और आवश्यकता को पूर्णरूप से तभी समझा जा सकेगा, जब उस समय पूरे विश्व में और विशेष रूप से अरब में फैली हुई अराजकता पर भी एक दृष्टि डाल ली जाए। उस समय अरब में-

1. राजनैतिक व्यवस्था का अभाव था और हर कबीला अपनी आवश्यकता अनुसार क़ानून बना लेता था। क़बीलों की आपसी लड़ाईयां सैकड़ों वर्षों तक चलती रहती थीं।
2. सूद और गुलामी की प्रथा ने अमीरों को कमजोरों पर जुल्म व अत्याचार करने की पूरी छूट दे रखी थी। गुलामों को वस्तु के रूप में देखा जाता था और उनको समाज में कोई अधिकार प्राप्त न था।
3. औरतों की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी और लड़कियों को जीवित ही जमीन में गाड़ दिया जाता था। विरासत में उनका कोई अधिकार नहीं था।
4. शराब, जुआ, व्यभिचार और लूट-मार का बाज़ार गरम था।
5. शिक्षा का अभाव था और लोग वास्तविक ईश्वर की उपासना छोड़कर मूर्तिपूजा करते थे। हर क़बीले का अपना अलग उपास्य था।

उस समय भारत की स्थिति भी अत्यन्त दयनीय थी। वर्ण-व्यवस्था ने समाज को जाति के आधार पर विभाजित कर रखा था और नीची जाति, ऊँची जाति के अत्याचारों का शिकार थी। महिलाओं की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी और सती-प्रथा ने उनको जीने के अधिकार से भी वंचित कर दिया था। शुद्रों की तरह महिलाओं को भी धार्मिक पुस्तकों को छूने तक का अधिकार नहीं था। ईश्वर के बजाए उसकी रचनाओं की उपासना होती थी और लोग जानवरों, पेड़-पौधों, चांद-सूरज आदि की पूजा करते थे।

ऐसी जटिल समस्याओं से जूझती हुई मानवता के मार्गदर्शन के लिए ईश्वर ने अपने दूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) को दुनिया में भेजा।

काम का आरम्भ

हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने अपने काम का आरम्भ लोगों को स्वयं अपने ही हाथों से बनाए गए उपास्यों की उपासना छोड़कर, इस संसार के वास्तविक प्रभु, मालिक और जन्मदाता की उपासना के आह्वान से किया।

"ऐ लोगो! बन्दगी करो अपने रब की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम बच सको।" (क़ुरआन 2:21)

आप (सल्ल०) भलि भांति जानते थे कि लोगों को एक वास्तविक ईश्वर की उपासना की ओर वापस लाए बग़ैर समाज सुधार का कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हो सकता। आपने लोगों को यह भी बताया कि मृत्य-पश्चात सभी इन्सानों

को ईश्वर के समक्ष उपस्थित होकर अपने सम्पूर्ण जीवन का हिसाब देना होगा। वास्तविक सफलता यही मानी जाएगी कि इन्सान नर्क की आग से बच जाए और स्वर्ग में प्रवेश पा जाए।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) जानते थे कि समाज-सुधार का कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हो सकता, जब तक मनुष्य का हृदय परिवर्तित न हो और वह स्वयं अपने आपको ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी न समझने लगे। आप (सल्ल॰) से पूर्व जितने भी पैग़म्बर दुनिया में आए सभी ने इसी सत्य की ओर लोगों का आह्वान किया था और ईश्वर से अपने बिगड़े हुए सम्बन्ध को सुधारने का आह्वान किया था।

आप (सल्ल॰) द्वारा प्रस्तुत की गयी शिक्षाएं, ईश्वर द्वारा अवतरित 'वह्य' (प्रकाशना) पर आधारित होती थीं और आप मनुष्यों तक ईश्वर के सन्देशों को पहुंचाने में कोई क़सर नहीं छोड़ते थे।

अपने उद्देश्य में सफलता

पूरे मानव-इतिहास में समाज-सुधार में सफलता का ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता जैसी सफलता हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को प्राप्त हुई। यही कारण है कि 1978 में अमेरिकी लेखक माइकल हार्ट ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "इतिहास के 100 सबसे प्रभावशाली व्यक्ति" में न केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को सर्वप्रथम स्थान दिया, बल्कि साथ में यह भी लिखा कि 'पूरे इतिहास में धार्मिक एवं सांसारिक क्षेत्र में सर्वोच्च सफलता पाने वाले एकमात्र व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ही हैं।"

आपने जहां एक ओर मानव-जीवन को सफलता की नयी परिभाषा दी, समाज-सुधार के नए आधार बताए, वहीं दूसरी ओर एक ऐसे आन्दोलन की स्थापना भी की जिसने अत्यन्त तीव्र गति से आप (सल्ल.-) ही के ६३ वर्षीय जीवनकाल में पूरे अरब की स्थिति को बदलकर रख दिया। आपके द्वारा प्रस्तुत किए गए ईश्वरीय सन्देश से प्रभावित होने वालों में अरब के मूर्तिपूजक भी थे, मदीना के यहूदी भी थे, रोम साम्राज्य के ईसाई भी थे और ईरान के पारसी भी। जिसने भी आपके सन्देश को सुना वह प्रभावित हुए बिना न रह सका।

आपकी शिक्षाओं के आधार पर अरब में एक नई सभ्यता की नींव पड़ी। एक ऐसी सभ्यता जिसमें किसी पर जुल्म व अत्याचार की कोई जगह नहीं थी जिसमें स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार दिए गए और उन्हें इतिहास में पहली बार विरासत का अधिकार प्राप्त हुआ। जहां उन्हें सुरक्षा का भय नहीं सताता था। जहां गोरे और काले बराबर थे। जहां जाति के आधार पर लोगों के विभाजन की कोई संभावना नहीं थी।

जहां समाज के हर क्षेत्र में नैतिकता का बोलबाला था। जहां ग़रीबों के शोषण के लिए कोई स्थान न था और उन्हें ब्याज के जाल में नहीं फंसाया जा सकता था। जहां कन्या श्रूण-हत्या के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। जहां अपराध हो जाने पर व्यक्ति स्वयं को सज़ा के लिए पेश कर देता था। जहां लोगों से स्वेच्छा से शराब को तिलान्जलि दे दी। जहां संकुचित राष्ट्रवादिता की नहीं पूरी मानवता के हित की बात की जाती थी। जहां रोटी, कपड़ा और मकान की कोई समस्या नहीं थी। जहां शासक स्वयं को सेवक समझता था और जहां इन्सान दूसरे इन्सानों का गुलाम नहीं बल्कि ईश्वर का बन्दा होता था।

ऐसी सभ्यता को न भौगोलिक रेखाओं के अन्दर सीमित रखा जा सकता है और न हजरत मुहम्मद (सल्ल.) की शिक्षाओं पर आधारित इस सभ्यता को रखा जा सका। आज भी संसार का हर व्यक्ति इन्हीं आदर्शों की अपेक्षा करता है और इनकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। अरब की सीमाओं को पार करती हुई यह सभ्यता अन्य देशों तक बहुत तेजी से फैलती चली गई और लगभग एक हज़ार वर्ष तक पूरे विश्व के लिए आदर्श का काम करती रही।

परिवर्तन की कुछ झलकियां

(1) **मानव-समानता :** सभी इन्सान एक मां-बाप की सन्तान हैं और सभी बराबर हैं। जाति, रंग, भाषा अथवा धर्म के आधार पर कोई बड़ा-छोटा नहीं होता। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इस सत्य की मात्र शिक्षा देने पर ही संतोष नहीं किया, बल्कि इस समानता को समाज में स्थापित करके दिखाया भी। आप (सल्ल॰) ने इन्सानों को वर्गों और जातियों में विभाजित करनेवाली सभी सीमाओं को मिटा दिया और मानवता को ऐसा सन्देश दिया, जिससे सारे भेदभाव समाप्त हो गए। ईश्वर ने आप (सल्ल॰) के माध्यम से पूरी मानवता को सन्देश दिया—

''ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और क़बीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह के यहां तुममें सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है, जो तुममें सबसे अधिक डर रखता है। निश्चय ही अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।''

(क़ुरआन 49:13)

हज़रत मुहम्मद के क़रीबी सहयोगियों में हज़रत बिलाल (रज़ि॰) काले रंग के हब्शी थे और हज़रत सलमान (रज़ि॰) फ़ारस के रहनेवाले थे। यह उनकी शिक्षाओं ही का असर था कि गुलामी की प्रथा अरब में 1450 वर्ष पूर्व ही समाप्त हो गई थी, जबकि अमेरिका जैसे देश में भी वह अब से 100 वर्ष पूर्व तक प्रचलित रही है।

(2) धार्मिक स्वतंत्रता : हम सबको पैदा करनेवाला ईश्वर यह तो चाहता है कि सभी इन्सान उसके द्वारा प्रदान की गई जीवन-व्यवस्था (अर्थात् इस्लाम) को अपना लें, परन्तु उसने इसके लिए इन्सानों को बाध्य नहीं किया है। क़ुरआन में उसने घोषणा कर दी है कि **''धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं है।''** (क़ुरआन 2:256)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने अपने अनुयायियों को यही शिक्षा दी कि वह सभी धर्मों और उनके महापुरुषों का आदर करें—

''जान लो! जो कोई भी किसी ग़ैर-मुस्लिम पर अत्याचार करेगा या उसे उसके अधिकार से वंचित करेगा और उन पर ऐसा बोझ डालेगा जिसे वह उठा नहीं सकते या उनकी मर्ज़ी के बिना उनसे कोई चीज़ छीनेगा, तो मैं क़यामत के रोज़ उस अत्याचारी के विरुद्ध खड़ा होऊंगा।''

(हदीस)

मदीना में नजरान के ईसाइयों के प्रतिनिधिमंडल को हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने न सिर्फ़ मस्जिद में उनके धर्मानुसार उपासना करने की अनुमति दी, बल्कि उन्हें लोगों के सामने अपनी बात रखने का भी पूरा अवसर दिया। यह हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की धार्मिक स्वतंत्रता पर आधारित शिक्षाओं ही का प्रभाव था कि कितने ही देश सैकड़ों वर्ष तक मुसलमानों के अधीन रहे, परन्तु वहां के निवासी पूरी स्वतंत्रता से अपने धर्म पर बने रहे। भारत इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

(3) महिलाओं के अधिकार : इस्लाम से पहले समाज में महिलाओं को हीन-दृष्टि से देखा जाता था। पुत्री के जन्म पर परिवार वाले स्वयं को लज्जित महसूस करते थे और इस लज्जा से बचने के लिए उसे जीवित ज़मीन में गाड़ देते थे। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने न सिर्फ़ इस क्रूर और अमानवीय प्रथा का समापन किया, साथ ही महिलाओं को वह अधिकार भी दिलाए, जो उन्हें उससे पूर्व कभी प्राप्त नहीं हुए थे। जैसे—

• शादी में निर्णय का अधिकार • तलाक़ का अधिकार • सम्पत्ति और विरासत का अधिकार • शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार • दोबारा शादी करने का अधिकार • परिवार की आर्थिक ज़िम्मेदारी से छूट • उस पर झूठा आरोप लगाने वाले को दंड का प्रावधान ।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) द्वारा 1450 वर्ष पूर्व महिलाओं को दिलाए गए यह अधिकार अन्य देशों में बीसवीं शताब्दी में जाकर उपलब्ध हुए थे। महिलाओं को दिए गए इन अधिकारों से प्रभावित होकर आज भी, समस्त झूठे प्रचारों के उपरांत इस्लाम स्वीकार करने वालों में अधिकांश महिलाएं ही होती हैं।

(4) नैतिकता की स्थापना : हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने यह बताया कि नैतिकता की परिभाषा समय के साथ परिवर्तित नहीं होती। 1450 वर्ष पूर्व की अनैतिकता आज नैतिकता नहीं बन सकती और नैतिकता राष्ट्र और देश पर भी निर्भर नहीं करती। उन्होंने नैतिकता के ऐसे सिद्धांत बताए जो पूरी मानवता के लिए हैं और जो सदैव वैध रहने वाले हैं। इस्लाम में नैतिकता का मौलिक आधार यह है कि "इस सम्पूर्ण संसार की रचना करनेवाला, इसे चलानेवाला और इन्सानों का पालन-पोषण करनेवाला एक ही ईश्वर है।" इस कारण सभी इन्सान उसकी प्रजा हैं और उनके इस सांसारिक जीवन का उद्देश्य इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है कि वह उसके मार्गदर्शन के अनुरूप ही जीवन व्यतीत करें। हर वह चीज़ नैतिक है जिसकी अनुमति उसने प्रदान की है और हर वह चीज़ जिससे उसने रोक दिया है अनैतिक कही जाएगी चाहे पूरा विश्व उस पर कार्यरत ही क्यों न हो। झूठ, धोखा, भ्रष्टाचार, बलात्कार, अत्याचार, हत्या, सूदख़ोरी, बड़ों का अनादर आदि कर्म सदैव अनैतिक रहे हैं और रहेंगे। ईमानदारी, सत्य बोलना, इन्साफ़, बड़ों का आदर, दूसरों के जीवन की रक्षा आदि सदैव नैतिक कर्म रहे हैं और रहेंगे।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने न सिर्फ़ यह कि नैतिकता को परिभाषित किया, बल्कि उसको पहचानने और परखने के आधार भी प्रदान किए जिससे मानवता पथभ्रष्टता से सदैव स्वयं को बचा सके।

"सच्चाई के मार्ग पर चलो क्योंकि यही सीधा रास्ता है जो स्वर्ग की ओर जाता है।" (हदीस)

(5) राजनीति में आदर्शों का पालन : समाज-सुधार का कोई भी आन्दोलन सफल नहीं हो सकता, जब तक राजनीतिक व्यवस्था में सुधार न हो। यही कारण है कि पूर्ण समाज-सुधार की रूपरेखा में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने राजनीति को भी सम्मिलित किया।

आप (सल्ल॰) ने बताया कि ईश्वरीय जीवन-व्यवस्था मानव जीवन के हर क्षेत्र में उसका मार्गदर्शन करती है, चाहे वह आर्थिक क्षेत्र हो अथवा राजनैतिक। आपने यह भी बताया कि मनुष्य कभी भी निष्पक्ष होकर क़ानून नहीं बना सकता। यह तो इन्सानों को पैदा करनेवाला ईश्वर ही है जो पूर्णरूप से निष्पक्ष है और जो इन्सानों की आवश्यकताओं से भी भली-भांति परिचित है। उसी को इस बात का ज्ञान है कि क्या कुछ इन्सानों के लिए लाभदायक है और क्या कुछ हानिकारक। वास्तविक राजनीति तो यह है कि इन्सान स्वयं

क़ानून बनाने के बजाय ईश्वरीय क़ानून के कार्यान्वयन के लिए प्रयत्न करे। आपने न सिर्फ़ यह बताया कि शासक वास्तव में प्रजा का सेवक होता है, बल्कि इसी आदर्श के अनुसार अपना जीवन भी व्यतीत किया।

आप (सल्ल.) अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत करते थे। ज़मीन पर सोते थे और रुखा-सूखा खाकर रहते थे। आपके कपड़ों पर पैबन्द लगा होता था और आपके घर में सुख-सुविधा की कोई वस्तु नहीं होती थी। कितनी बार ऐसा हुआ है कि आपके घर में कई दिनों तक अन्न के अभाव के कारण खाना नहीं पक पाया। आपकी मृत्यु के समय घर में चिराग जलाने के लिए तेल दूसरों से मांगना पड़ा था। आपके बाद आपके अनुयायियों ने भी इसी आदर्श का पालन किया। एक बार एक राजदूत इस्लामी शासक हज़रत उमर (रज़ि.) से मिलने आया तो उन्हें ज़मीन पर लेटा हुआ पाया। हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के इन्हीं आदर्शों का प्रभाव था कि इसलाम विश्व में तेजी से फैला और आज भी फैल रहा है।

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के सन्देश–

- "जो कोई इस हाल में मर गया कि वह ईश्वर के साथ दूसरों को भी शरीक (साझी) करता था, वह नरक में जाएगा।"
- "यदि तुमने मां-बाप की सेवा की, उन्हें ख़ुश रखा, उनका आज्ञापालन किया तो स्वर्ग में जाओगे। उन्हें दुख पहुंचाया, उनका दिल दुखाया, उन्हें छोड़ दिया तो नरक के पात्र बनोगे।"
- "ईश्वर की नाफ़रमानी (अवज्ञा) की बातों में किसी भी व्यक्ति (चाहे माता-पिता ही हों) का आज्ञापालन निषेध, हराम, वर्जित है।"
- "तुममें सबसे अच्छा इन्सान वह है, जो अपनी महिलाओं के साथ अच्छे से अच्छा व्यवहार करे।"
- "अत्याचारी, क्रूर और ज़ालिम शासक के सामने हक़ (सच्ची, खरी, न्यायनिष्ठ) बात कहना (सच्चाई की आवाज़ उठाना) सबसे बड़ा जिहाद (धर्मयुद्ध) है।"
- "अपने अधीनों (मातहतों, Subordinates) से, उनकी क्षमता, शक्ति से अधिक काम न लो।"
- "ब्याज़ लेना इतना घोर पाप है जैसे कोई अपनी मां के साथ व्यभिचार करे।"
- "दूसरों के प्रति अपने व्यवहार वैसे ही रखो, जैसे व्यवहार तुम अपने प्रति उनसे चाहते हो।"

x x